ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-12* January- 2018
Innovation The Research Concept

नागार्जुन के काव्य में मानवेत्तर प्राणी

सारांश

हिंदी काव्य जगत में प्रायः कवियों ने मानव जीवन के भव्य एवं उदात्त विषयों पर ही कविताएं लिखी हैं, किंतु मानवेतर प्राणियों के जीवन को केंद्र में रखकर हिन्दी के बहुत कम कवियों ने रचना की है। वैसे हिंदी साहित्य में महादेवी वर्मा ने हेमंत, वसंत, सोना जैसे पशु पक्षियों को अपने लेखन का विषय बनाया है, किंतु वे गद्य साहित्य में है, काव्य में नहीं हिन्दी काव्य की दुनिया में नागार्जुन पहले ऐसे कवि है जिन्होंने मानवेत्तर प्राणियों को अपने साहित्य में स्थान दिया है। जीवन की तुच्छ से तुच्छ लगने वाली चीजों से भी रागात्मक संबंध स्थापित किया है तथा उसे अपने लेखन का विषय बनाकर उसके प्रति अपनी आत्मीयता प्रकट की है।

मुख्य शब्द : पशु, पक्षी एवं प्रकृति

प्रमोद कुमार प्रसाद
असिस्टेंट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
जे.के.कॉलेज,
पुरुलिया, पश्चिम बंगाल

प्रस्तावना

नागार्जुन आधुनिक हिन्दी और मैथिली साहित्य के केन्द्रीय और सशक्त व्यक्तित्व है। उनका रचना संसार बहुत विराट और बहुआयामी है। उनकी कविताओं में एक ओर मानव–जीवन के सुख–दुःख, हर्ष–विषाद, आशा–आकांक्षा और उनके स्वप्नों तथा संघर्षो का चित्रण हुआ है तो दूसरी ओर मानवेत्तर प्राणियों के प्रति भी उनकी गहरी संवेदना व्यक्त हुई है। सृष्टि का कोई पक्ष ऐसा नहीं जो इनसे अछूता रहा हो। यही कारण है कि एक मादा सूअर भी इनके यहाँ मादरे हिंद साबित होती हुई कविता की प्रेरणा बन जाती है। उछल–कूद मचाता नेवला भी मुक्तिबोध की कविता 'अंधेरे में' के समान एक लंबी कविता का दुलारा प्रेरणा स्रोत बन जाता है। सवाल है कि नेवला और मादा सूअर कविता की प्रेरणा क्यों न बने ? कौआ ,कानी कुतिया या छिपकली कविता में क्यों महत्वपूर्ण भूमिका न निभाएं? दरअसल ये प्राणी न केवल निम्न एवं मध्यवर्गीय प्राणी की जिंदगियों से गहरे जुड़े हैं बल्कि प्रमुख संकेत भी है, जो कविता में व्यंग्य की सृष्टि करते हैं। अनकही बात को नाटकीय अंदाज में पेश करने का माद्दा रखते हैं और फिर नागार्जुन तो हैं ही प्रगतिशील कवि, तो वे भला इस जमीन से जुड़े संकेतों से कब तक दूरी बना सकते हैं।

साहित्यावलोकन

मानवेत्तर प्राणियों को केंद्र बनाकर हिन्दी काव्य जगत में कविता लिखने वाले नहीं के बराबर हैं। मानवेत्तर प्राणियों को केंद्र बनाकर साहित्य जगत के जिन कवियों ने कविताएँ लिखी उनमें नागार्जुन अन्यतम हैं। नागार्जुन ने जितनी संवेदना मानव समुदाय के प्रति व्यक्त की उतनी ही संवेदना मानवेत्तर प्राणियों के प्रति भी व्यक्त की है। उनकी संवेदनशील आंखें जिस संवेदना से एक ओर फटी बिवाई वाले पैर देख सकती है, उसी संवेदना से वे आंखें हरी घास पर लेटी मादा सूअर को भी देखती है। नागार्जुन की संवेदना का ही कमाल है कि उन्होंने ऐसे–ऐसे विषयों पर कविताएँ लिखीं जिनकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। उनके काव्य संसार में पेड़, पौधे, हवा, बादल, प्रकृति, समुद्र, सूर्य चन्द्रमा, तारे, मनुष्य के अलावा समाज के उपेक्षित मानवेत्तर प्राणी भी उचित स्थान पाते हैं जिन्हें घृणा की नजर से देखा जाता है। उन्होंने अपनी कविताओं के विषय उपेक्षित, मामूली जीवन से उठाया तथा उन्हें विस्तृत फलक पर चाँद रोशनी की तरह बिखेरा।

उद्देश्य

नागार्जुन की मानवेत्तर कविताएँ किसी प्रकार की जुगुप्सा का भाव नहीं जगाती, बल्कि पाठक को सोचने और सिर खुजलाने के लिए विवश करती है। बाबा की संवेदना इतनी व्यापक है कि उनमें सब कुछ समाहित है। सब कुछ ग्राह्य है। कुछ भी तुच्छ नहीं, सब कुछ पवित्र है। दुनिया जिसे तुच्छ समझती है, उनकी दृष्टि में वह विशिष्ट है और दुनिया जिसे कुरूप कहती है, वह भी इनके लिए सुंदर है। यही कारण है कि मानव नहीं, मानवेतर प्राणी और जड़ प्रकृति भी

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-12* January- 2018
Innovation The Research Concept

उनके काव्य के नायक हैं। यह कोई छोटी–मोटी बात नहीं है। यह बाबा जैसे विशाल ह्रदय वाले कवि की विशिष्ट एवं बड़े होने की पहचान है । मानवेत्तर प्राणियों के प्रति लोगों के ह्रदय में प्रेमऔर अनुराग पैदा करना ही कवि कामूल उद्देश्य है ।

प्रगतिशील धारा के प्रमुख कवि बाबा ने मानवेत्तर प्राणियों पर कुल दस कविताएं लिखी हैं। मानवेत्तर प्राणियों पर लिखी नागार्जुन की कविताओं को मुख्यतः दो भागों में बाँटा जा सकता है –(क) पक्षियों पर आधारित कविताएँ (ख) पशु एवं अन्य जीव जंतुओं पर आधारित कविताएँ।

मानवेत्तर प्राणियों में पंक्षियों पर लिखी उनकी कविताओं में 'चातकी' पहली कविता है। इस कविता के माध्यम से नागार्जुन ने जीवन मूल्यों को स्थापित करने का प्रयास किया है। आज चारों तरफ अराजकता फैली हुई है। मानवीय संवेदनाएँ शून्य होती जा रही हैं। जीवन–मूल्यों का उत्तरोत्तर ह्रास होता जा रहा है। सभी आत्म केन्द्रित हो गए हैं। ऐसी विकृत परिस्थितियों में चातक का आदर्श जीवन मानव के लिए प्रेरणादायक है। उसकी दृढ़ इच्छाशक्ति उसे अपने अभीष्ट लक्ष्य को पाने में सहायक है। कहा जाता है कि चातकी स्वाति बूँद ग्रहण कर ही अपना प्यास बुझाती है। लाख मुसीबत झेल कर भी वह अपने लक्ष्य से टकती नहीं है, कठोर तप करके वह अपनी जीवन मूल्यों की रक्षा करती है :–

''टुकड़ियों में बँटे आर बिखरे हुए
धन्य ! स्वाती के जलद तुम धन्य हो
विकल थी चिर प्यास से यह चातकी
आ गए तुम, अब कमी किस बात की
किया दर्शन, नयन शीतल हो गए
उपालम्भक भाव थे, सब सो गए
आ गई है जान में अब जान रे
कर लिया मैंने अमृत का पान रे
चार बूँदे ही मुझे पर्याप्त थी !''[1]

यह चातकी महान है। थोड़े में ही अधिक संतुष्ट होना उसका विशिष्ट गुण है। यह कवि के ह्रदय की विशालता है कि वह सामान्य चातकी में गुण–ही–गुण देखता है। उसकी दृढ़ इच्छा शक्ति की सराहना करता है। कवि की दृष्टि में चातकी कोई साधारण चातकी नहीं है। वह उदात्त गुणों से युक्त प्रकृति में मुक्त विचरण करने वाली महानायिका है।

वलाका' के सौंदर्य को देखकर कवि अभिभूत है।'वलाका' भी कवि को बरबस आकृष्ट करता है। नीले आसमान में सफेद रंग के कई बगुले पंक्तिबद्ध उड़े जा रहे हैं। कवि को लगता है कि जैसे यमुना के श्यामल जल में सफेद कमल फूलों की एक लंबी माला अविरल गति से बही जा रही है। नीले आसमान में बगुलों का उड़ना कवि की नजर में पावस के आगमन की सूचना है। दरअसल कवि कृषक है। उसे बगुलों के उड़ने का मतलब पता है। एक खेतिहर होने के कारण कवि को पूर्वाभास हो जाता है कि अब वर्षा होगी सामान्य लगने वाले यह बगुले कवि के लिए विशिष्ट है। 'वलाका' कविता कुछ पंक्तियां द्रष्टव्य हैं :–

''पावस की आगमन सूचना
देने आई प्रकृति सुंदरी
फहरा फहराकर धवल पताका
उड़ी जा रही नील गगन में
पवन पंख पर विमल वलाका।''[2]

चातकी और बगुले के साथ–साथ मुर्गा भी नागार्जुन की कविता का नायक है। एक साधारण मुर्गे को कौन पूछता है ? किंतु कवि का उससे भी रागात्मक संबंध है। जेल में बंद नागार्जुन को भिनसार में मुर्गे की बाँग सुनाई पड़ती है। एकदम ठीक ढाई से तीन बजे के आसपास कवि उस मुर्गे को अलार्म घड़ी कहता है :–

'यह मुर्गा नहीं ,
अलार्म घड़ी है , जेल की ....।'[3]

जैसे अलार्म घड़ी ठीक समय पर बजती है, वैसे ही दड़बे में बंद मुर्गा प्रतिदिन भिनसार में ठीक एक ही वक्त पर बाँग देता है। मुर्गे की इस खासियत को रेखांकित करने वाला नागार्जुन को छोड़कर हिंदी काव्य साहित्य में दूसरा कवि कौन है ? वक़्त पर दुनिया को जागरण का संदेश देने वाली बाँग एक तुच्छ पंक्षी की इस खासियत को देखने के लिए ह्रदय की आँखें चाहिए, जो नागार्जुन के पास थी, तभी तो उन्होंने मुर्गे के ह्रदय की विशालता, परोपकार, वक्त की पाबंदी का तथा उसके द्वारा दिए जाने वाले संदेश जैसे गुणों को देख लिया। दड़बे में बंद रहकर भी वह अपने स्वाभाविक गुण को भूलता नहीं है। अपने कर्तव्य के प्रति एकदम सचेष्ट रहता है। जेल में बंद कवि को उस मुर्गे से प्रेरणा मिलती है कि वह भी अपने स्वभाविक गुणों को भूलेगा नहीं वह भी अपने कर्तव्य के प्रति सचेष्ट रहेगा। दड़बे में बंद होने के बावजूद मुर्गा बोलता है, उसकी आवाज में दम है। जेल की यातनाएं झेल कर भी कवि अपन भाषा भूलेगा नहीं। उसी दमखम से वे रगड़ेंगे इसको भी उसको भी।

पक्षियों में 'डियर तोताराम' भी नागार्जुन के आँखों के सामने है, जो जहरीखाल में एक नाशपाती के पेड़ में उल्टा लटककर फल का जायका ले रहा है। लेकिन कवि के आने की आहट पाकर उड़ जाता है। कवि इस सुखद दृश्य को देखने से वंचित रह जाता है। कवि चाहता है कि वह तोता आये और नाशपाती के पेड़ में उल्टा लटक कर मौसम की ताजगी का स्वाद ले। ताकि वह उस नयनाभिराम दृश्य को एकटक देख सके। साधारण से लगने वाले ऐसे छोटे–छोटे दृश्य को देखकर कवि अभिभूत है। कवि का अभिभूत होना असाधारण बात है भौतिकता की इस चमक–दमक की चकाचौंध में लोगों की आँखें ऐसे दृश्यों को कहाँ देख पाती है ? यह कवि की संवेदना ही है, जो उन्हें अभिभूत करती है। कवि कहता है कि वह तोता गृह पालित नहीं है फिर भी वह उनकी संवेदना का हकदार है। हमारे पैरों की आहट से उसे डरने की जरूरत नहीं। कवि उस तोते को पुनः आने का निमंत्रण देते हुए कहता है :–

''आइए, बेखटके आइए !
उल्टा लटकिए,
हमारा मनोरंजन कीजिए !
प्लीज ,डियर तोताराम !''4

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-12* January- 2018
Innovation The Research Concept

मानवेत्तर प्राणियों में पक्षियों की तरह पशुओं एवं अन्य जीव जंतुओं पर भी नागार्जुन ने 'अकाल और उसके बाद',' 'पैने दातों वाली', 'नेवला', 'जी हां यह सब की चहेती है' और 'बाघ आया' आदि कविताएं लिखी हैं। ये सभी कविताएँ कवि की संवेदना के संवाहक हैं।

'अकाल और उसके बाद' कविता में चूहे, छिपकलियों, कानी कुतिया और कौआ इन सभी जीव जंतुओं की चर्चा है। इन्हीं के माध्यम से मनुष्य की उपस्थिति का एहसास होता है। अकाल पड़ने पर जहाँ आम रचनाकारों की संवेदना केवल मनुष्यों के दुख–दर्द को प्रकट कर रह जाती है वहीं नागार्जुन की संवेदना केवल मनुष्य तक ही सिमटकर नहीं रहती, बल्कि इन समस्त जीव जंतुओं के लिए भी प्रकट होती है। इन जीव जंतुओं की विकलता ही कवि की संवेदना को जगाती है :–

''कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त।'' [5]

कौन कवि होगा जो कुतिया ,छिपकलियों, चूहों, कोऔं के दुख से दुखी होगा और उसके प्रसन्न होने पर प्रसन्नचित यह नागार्जुन के बस की ही बात है।

'नेवला' बाबा की एक लंबी कविता है। कवि ने उस छोटे से नेवले को अपनी लंबी कविता की सौगात दी है। बात उन दिनों की है, जब कवि जेल में बंद था। तभी उस नेवले पर कवि का प्यार उमड़ आया था। कवि ही नहीं जेल में बंद उसके अन्य साथी भी उसे गोद में उठाकर उसकी आँखों में आँखें डालकर बहुत खुश होते थे। कोई उन्हें 'जम्बू' कहता, तो कोई 'जमूरा', कोई 'मोतिया' कहता तो कोई 'दुलरुआ' अनेक नाम हो गए थे उसके । एक बार कवि दोपहर में लेटकर झपकियाँ ले रहा था, तभी उस नेवले ने कवि की नाक में अपने पैने दाँत गड़ा दिए थे। फिर भी कवि कहता है कि :–

''नहीं, वो गुस्से में नहीं था
वह लाड़ लड़ाने के मूड में था।''[6]

कवि को नेवले के मूड़ का भी पता है। इससे यह पता चलता है कि नेवले से कवि को कितनी अधिक आत्मीयता है। वह उसके छोटे–छोटे क्रिया–कलापों से भी वाकिफ है। उसकी हर मनःस्थिति की जानकारी कवि को है। कवि जब कहता है कि देख मोतिय, तू–रह–रह कर हफ्ता–हफ्ता भर गायब रहता है। देख जमूरे, तेरी आवारगी हमें बेहद खलती है ऐसा करोगे तो तुम्हें पिटाई पड़ेगी। इन सब बातों से नेवले के प्रति कवि की आत्मीयता झलक आई है। नेवले के प्रति उसका प्रगाढ़ रागात्मक सम्बन्ध ही प्रगट हुआ है। कवि उसे खीर खिलाना चाहता है। किंतु खीर का ताजा – ताजा दूधिया भाप सूंघकर वह नेवला बाबा की गोद से उछलकर चूल्हे के पास पहुँच जाता है, जहाँ पतीला में गरमा–गरम खीर है। वह उसे नीचे सीमेंट वाली फश पर बिखेर कर जल्दी–जल्दी चाटने लगता है। यह दृश्य देखकर कवि निहाल हो जाता है, कवि कह उठता है :–

''खा रे खा ! तेरे खातीर
बाबा आज खीर–पाटी दे रहे हैं।'' 7

पतीला से खीर गिराकर खाते देखकर नेवले के प्रति कवि को गुस्सा नहीं आता है, बल्कि उसके प्रति अधिक प्यार उमड़ आया है। नेवले के प्रति यह कवि की आत्मीयता ही है, कि वह उसके नाज–नखरे को झेलता है। इतना ही नहीं कवि ने तो उसे 'सुपुत्र' कह कर संबोधित भी किया है। यह कवि की प्रेम की पराकाष्ठा है। कवि जब उसे 'सुपुत्र' कहता है तो उसे ऐसा लगता है कि जैसे वे नेवले की उछल–कूद में अपने बच्चों की छवि देख रहा है। एक बच्चे के प्रति पिता का जो लगाव होता है, वही वात्सल्य भाव यहाँ कवि का नेवले के प्रति झलकता दिखता है। नेवला कविता मात्र एक पशु के जीवन की दिनचर्या का उल्लेख भर नहीं हैं, बल्कि बाबा और नेवले के आत्मीय संबंध का एक सुंदर एल्बम है। मानवेत्तर प्राणियों के प्रति इतना गहरा आत्मीय लगाव हिंदी काव्य साहित्य में कहीं और देखने को नहीं मिलता है।

'पैने दांतो वाली' मानवेत्तर प्राणी 'सूअर' पर लिखी गई एक महत्वपूर्ण कविता है जो कवि की संवेदना को झकझोर कर रख देती है। कवि की कविता का समस्त सौंदर्यशास्त्र इस कविता में मौजूद है। जीवन का तुच्छ से तुच्छ अंश भी कविता के लिए तुच्छ नहीं है। सूअर का नाम लेते ही लोग नाक सिकुड़ने लगते हैं। उसे घृणा की दृष्टि से देखा जाता है। उसे तुच्छ समझा जाता है, किंतु कवि की आत्मीयता उसके प्रति झलक आयी है। वह कवि की कविता की नायिका है और नायिका भी ऐसी वैसी नहीं कद–काठी में तगड़ी है। यमुना नदी के किनारे मखमली घास पर पूस की मीठी धूप में वह पसरकर लेटी है। वह अपने बच्चों को दूध पिला रही है। उसके बच्चे भरे–पूरे थानों की खींचतान करते हैं, किंतु यह उसे अखरती नहीं है। आखिरकार,उनके छोटे–छोटे बच्चों के रग–रग में उसी की तो जान मचल रही है। एक सूअर के प्रति कवि की यह आत्मीयता बेजोड़ है : –

''यह भी तो मादरे–हिंद की बेटी है !
पैने दाँतों वाली .....।''[8]

कवि सूअर को मादरे–हिंद की बेटी कहकर जो मान दिया है। वह कवि के ह्दय की विशालता का प्रमाण है। इस कविता को पढ़कर कौन कह सकता है कि जीवन केभभव्य एवं उदात्त विषयों पर ही कविता लिखी जा सकती है। बाबा ने तो तुच्छ से तुच्छ विषयों पर सुंदर से सुंदर कविताएं लिखी है। यह एक मादा सूअर की कविता नहीं बल्कि यह जीवन के तुच्छतम अंश भी कविता के लिए अत्यंत पवित्र है, इसे रेखांकित करने का पुख्ता प्रमाण है।

जेल में बंद रहने के दौरान मधुमती गाय बाबा के वार्ड के सामने रोज आती है। बाबा के पास रोटी–भात जो भी होता था उसे खिलाते हैं। गाय के आते ही उसे ऐसी नजरों से देखतें हैं मानो जैसे उनका कोई सगा–संबंधी आया हो और उन्हें उसका आवभगत करना है। गाय भी यह जानती है कि बाबा के ह्रदय में उसके लिए प्रेम का अथाह सागर है। वह पशु है तो क्या हुआ? इतना तो वह जानती ही है तभी तो वह बाबा की ओर लपकती है और बाबा भी उसे अपनी ओर आते देख खुश हो जाते हैं –

''मैं इधर दूर, रूम से बहार खड़ा था
मधुमती को किचन की ओर लपकती देखकर
अच्छा लगा था, बड़ा अच्छा लगा था।'' [9]

नागार्जुन ने अहिंसक पशुओं के साथ–साथ हिंसक पशुओं के प्रति भी अपनी संवेदना व्यक्त की है। बाघ हिंसक पशु है, पर वह भी बाबा की आत्मीयता का हक़दार है। बाबा उसके प्रति अपनी आत्मीयता व्यक्त करते हुए लिखते हैं –

'' उसके दो बच्चे हैं
बाघिन सारा दिन पहरा देती है
बाघ या तो सोता है
या बच्चों से खेलता है..... ।'' 10

बाबा इन पंक्तियों के माध्यम से यहाँ यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं की बाघ है तो क्या हुआ? उसके पास भी दिल है बाघिन अपने बच्चों की सुरक्षा के लिए पहरा देती है और बाघ उनके साथ खेलता है। जंगल का सबसे शक्तिशाली प्राणी होने के नाते यद्यपि उन्हें किसी दुसरे प्राणियों से खतरा नहीं होता किन्तु बाघ–बाघिन का अपने बच्चों के प्रति अत्यधिक प्रेम ही उन्हें अतिरिक्त सुरक्षा के लिए विवश करता है हिंसक पशु की इस आत्मीयता को रेखांकित करना भी उनके प्रति आत्मीयता प्रदर्शित करना है।

निष्कर्ष

नागार्जुन के काव्य में मानवेत्तर प्राणियों के प्रति उनकी संवेदना के विवेचन के उपरांत निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि नागार्जुन बड़े ही संवेदनशील कवि हैं। मानव ही नहीं मानवेत्तर प्राणियों तक, धरती ही नहीं आकाश तक, उनकी संवेदना का विस्तार है। जीवन के क्षुद्रतम अंश भी उनकी संवेदना को झकझोरते हैं। मानवेतर प्राणियों के साथ बाबा का रिश्ता उनके प्रति आत्मीयता, सरलता, सहजता और संवेदनशीलता, उन्हें विशिष्ट एवं बड़े कवि के आसन पर बिठाती है। निःसंदेह नागार्जुन एक विशाल ह्रदय वाले बड़े कवि हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *सं. मिश्र शोभाकांत, नागार्जुन रचनावली भाग–1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ –39*
2. *सं. मिश्र शोभाकांत, नागार्जुन रचनावली भाग –1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ –61*
3. *सं. मिश्र शोभाकांत, नागार्जुन रचनावली भाग–2, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,पृष्ठ –118*
4. *सं. मिश्र शोभाकांत, नागार्जुन रचनावली भाग–2 राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,,पृष्ठ –369*
5. *सं. मिश्र शोभाकांत, नागार्जुन रचनावली भाग–1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,पृष्ठ –226*
6. *सं. मिश्र शोभाकांत, नागार्जुन रचनावली भाग–2, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,पृष्ठ –138*
7. *सं. मिश्र शोभाकांत, नागार्जुन रचनावली भाग–2, राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,पृष्ठ –140–141*
8. *सं. मिश्र शोभाकांत, नागार्जुन रचनावली भाग–2 राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,,पृष्ठ –74*
9. *सं. मिश्र शोभाकांत, नागार्जुन रचनावली भाग–2, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,पृष्ठ –124*
10. *सं. मिश्र शोभाकांत, नागार्जुन रचनावली भाग–2, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ –361*